B.A. (Hons) Part III
Philosophy - Paper V

Topic - आदिम धर्म की सामान्य विशेषताएँ

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Motcama.

आदिम धर्म प्राचीन काल के व्यक्तियों की धार्मिक भावना को प्रकाशित करता है। अशिक्षित एवं असभ्य मानव का धर्म होने के कारण इस धर्म में अंधविश्वास, जादू, भ्रम की मात्रा अधिक है। अतः आदिम धर्म का वास्तविक अर्थ है - असभ्यकालीन युग का धर्म। यही कारण है कि वर्तमान युग में भी असभ्य लोगों में यह धर्म विद्यमान है। आदिम धर्म प्राचीन काल के व्यक्तियों के धार्मिक विचारों का स्पष्टीकरण है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आदिम धर्म वह धर्म है जो अति प्राचीन है और जो आज भी अविकसित अवस्था में दिखता है। आदिम धर्म के निम्नलिखित रूप है। - जीववाद, प्राणवाद, फीतिशवाद, मानावाद और टोटमवाद। इसलिए हमलोग यह देखते है कि, आदिम धर्म की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

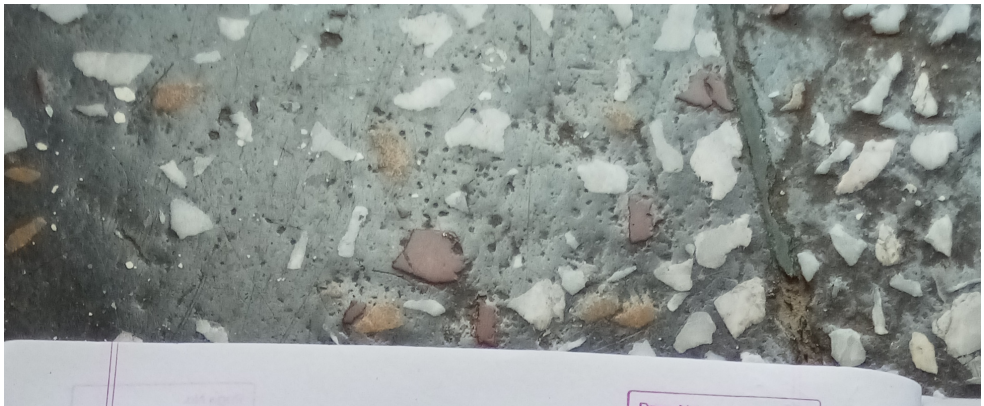

Page No.
Date

(2)

(1) आदिम धर्म की पहली विशेषता यह है कि यह धर्म पूर्णतः जादू पर आधारित है। आदिम धर्म में धर्म और जादू को अलग करना कठिन है।

(2) आदिम धर्म की दूसरी विशेषता यह है कि आदिम धर्म विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों से परिपूर्ण है।

(3) आदिम धर्म की तीसरी विशेषता यह है कि यहाँ कार्य-कारण सिद्धान्त का विचार विभिन्न तथा दोषपूर्ण है।

(4) आदिम धर्म की चौथी विशेषता यह है कि आदिम धर्म अप्रगतिशील होता है क्योंकि आदिकाल से चली आनेवाली प्रथाओं को आदिम मनुष्य बिना चिन्तन तथा तर्क के सत्य मान लेते हैं।

(5) आदिम धर्म की पाँचवीं विशेषता यह है कि आदिम धर्म में नैतिकता का अभाव दिखता है क्योंकि आदिम धर्म में मनुष्य, शुभ और अशुभ, उचित और अनुचित के अन्तर को समझने में असमर्थ था।

(6) आदिम धर्म की छठी विशेषता यह है कि इस धर्म में ईश्वर संबंधि विचार ~~अनेक ही अस्पष्ट एवं~~ ~~विभिन्न~~ भौतिक वस्तुओं के आधार

पर किया गया है। ③

इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि आदिम धर्म की निम्नलिखित त्रुटियाँ है।

① आदिम धर्म की प्रमुख त्रुटि यह है कि यह धर्म भय से पूर्णतः संचालित होता है। उनके धार्मिक विचार का मूल उद्देश्य भयप्रद जीवो से अपने को मुक्त करना कहा जा सकता है।

② आदिम धर्म की दूसरी त्रुटि यह है कि यह धर्म रुढिवादिता से ग्रस्त है यही कारण है कि यह धर्म मानवीय बुद्धि को संतुष्ट नही कर पाता है।

③ आदिम धर्म की तीसरी त्रुटि यह है कि यह धर्म अत्यंत ही संकुचित है क्योंकि प्रत्येक जाति का अलग-अलग धर्म होता है और यही कारण है कि एक जाति का सदस्य दूसरे जाति के सदस्य को अपने धर्म में, कबुल करने में असमर्थता प्रकट करते है।

④ आदिम धर्म की चौथी त्रुटि यह है कि आदिम धर्म में ईश्वर का विचार अत्यंत ही अस्पष्ट एवं विरोधपूर्ण है क्योंकि इसमें ईश्वर का स्वरुप स्पष्ट ज्ञात नही पडता है। यहाँ न ईश्वर का न कोई रूप है और न व्यक्तित्व।

इसप्रकार हमलोग यह देखते है कि आदिम धर्म मे अनेको त्रुटियाँ हैं।